आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

# बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-117 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जनवरी 2024 | मूल्य - 5 रूपए

# बालकनामा सदस्यों ने साझा किया 2023 की मुख्य उपलब्धियां, याद किये खुशियों के पल

**रिपोर्टर सरिता, हंसराज, काजल, राज किशोर, किशन**

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि बालकनामा एक प्रसिद्ध अखबार है जिसकी महक हमारे भारत के साथ-साथ दूसरे देशों तक भी फैली हुई है। हर महीने बालकनामा के पत्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों की खबर को सरकार और समाज तक पहुँचाते हैं और उन खबरों को अखबार में पढ़ने के बाद कई सरकारी अधिकारी एवं कार्यकर्ता भी बच्चों को सुविधा पहुँचाने का कयास करते हैं। हम इस कथानक के माध्यम से आपको यह बताने जा रहे हैं की वर्ष 2023 में बालक नामा में खबर छपने के दौरान किस प्रकार से सरकार के द्वारा बालकनामा के बच्चों को सुविधा प्राप्त हुई है या कुछ बच्चे सरकार के ऐसे अधिकारीयों से मिलकर कितने खुश हुए है जिससे बाल सहभागिता को भी बल मिला हैं। जब बालक नामा के पत्रकार, अनेक सड़क एवं कामकाजी बच्चों के पास पहुंचते हैं, और उनसे यह जानने का प्रयास करते हैं कि वे स्कूल किस कारणवश नहीं जा पा रहे हैं? तो अधिकांश कामकाजी बच्चे यही कारण बताते हैं कि उनके पास उनकी पहचान सम्बंधित दस्तावेज जल गया है, खो गया है, या उनका दस्तावेज अभी तक बना नहीं है। 26 मई 2023 को नेशनल एक्शन एंड कोऑर्डिनेशन ग्रुप का एंडिंग वायलेंस अगेंस्ट चाइल्ड के तहत राजस्थान बाल संरक्षण आयोग के साथ हुई बैठक में बच्चों के द्वारा आधार कार्ड न होने का मुद्दा उठाया गया था। बच्चों ने बताया की आधार कार्ड न होने के कारण विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया जा रहा और ना ही उन्हें अन्य सामाजिक योजनाओं का लाभ मिल पा रहा है, इन्हीं सारी समस्याओं से आयोग को अवगत करवाया गया।

इस समस्या को ध्यान में रखकर आयोग ने शीघ्र ही चेतना संस्था के सहयोग से आयोग के द्वारा पहली बार तीन दिवसीय विशेष आधार कैंप का आयोजन करवाया ताकि इस सत्र में बच्चों को विद्यालय में प्रवेश मिल सके। तीन दिवसीय (14 से 16 जून 2023) विशेष आधार कार्ड कैंप का शुभारंभ प्रेम नगर कच्ची बस्ती जयपुर से किया गया। राजस्थान राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बेनीवाल ने कैंप का उद्घाटन फीता काटकर किया तथा अध्यक्ष संगीता बेनीपाल ने बच्चों को आधार कार्ड के माध्यम से बच्चों को पहचान दिलाने में सहयोग किया। इस तीन दिवसीय कैंप में चेतना संस्था द्वारा संचालित 10 वैकल्पिक शिक्षा केंद्र के लगभग 125 प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभार्थियों इससे लाभ प्राप्त हुआ परिणामस्वरूप आधार कार्ड कैंप के द्वारा बच्चों को विद्यालय में जगह मिली और बच्चे काफी खुश हुए।

इसी अवधि में बढ़ते कदम के बच्चों की श्रीमती द्रौपदी मुर्मू (भारत की राष्ट्रपति) से मुलाकात हुई। दिल्ली में

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने, राष्ट्रपति भवन में गांधी स्मृति और दर्शन समिति (जीएसडीएस) द्वारा आयोजित 12 दिवसीय गांधी समर स्कूल में भाग लेने वाले विभिन्न झुग्गियों के 160 वंचित बच्चों से मुलाकात की। बच्चों के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व जीएसडीएस के उपाध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल ने किया। राष्ट्रपति मुर्मू ने बच्चों के साथ गर्मजोशी से बातचीत की और इन 12 दिनों के दौरान उनके द्वारा सीखी गई गतिविधियों को ध्यान से सुना। राष्ट्रपति ने बच्चों के दृढ़ संकल्प के लिए उनकी प्रशंसा की और उन्हें अपनी प्रतिभा को उत्साहपूर्वक आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया एवं उनके उत्थान की कामना की। गांधी समर स्कूल के बारे में विजय गोयल ने बताया कि इस 12 दिवसीय समर कैंप का उद्देश्य विभिन्न प्रकार की आधारित गतिविधियों के माध्यम से झुग्गी झोपड़ी के बच्चों को सशक्त बनाना है। बच्चों ने नृत्य, संगीत, दीवार पेंटिंग, पोस्टर बनाना, थिएटर, चरखा, कताई, वीडियोग्राफी, पेंटिंग, बांस, शिल्प और कागज समेत अन्य का प्रशिक्षण लिया। इन गतिविधियों में बढ़ते कदम के सदस्य भी शामिल थे, बढ़ते कदम के बच्चों ने भी राष्ट्रपति द्रोपति मुर्मू से मिलने के अनुभव बताए। 9 वर्षीय बालिका सोनम जो कि वर्तमान में तीसरी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रही है ने बताया जब मैं राष्ट्रपति भवन पहुंची तो वहां पर कई तरह-तरह की गतिविधियां भी की और हमें भारत की राष्ट्रपति द्रोपति मुर्मू जी से मिलने का मौका मिला और उन्होंने हमें अपने जीवन में आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जिसे जानकर मुझे बहुत अच्छा लगा। 12 वर्ष की सानिया जो कि वर्तमान में कक्षा आठ में शिक्षा प्राप्त कर रही है ने बताया जब हम द्रौपदी मुर्मू जी से मिले तो हमें काफी खुशी हुई और हमने आज तक यह नहीं सोचा था कि हम भारत के राष्ट्रपति से

भी मिल पाएंगे और उन्हें मिलने के बाद उन्हें देखकर हम काफी खुश हुए और हमने उनके साथ फोटो भी खिंचवाई।

इसी वर्ष अर्थात 2023 में बालकनामा के पत्रकारों को शिक्षा मंत्री से मिलने का मौका भी मिला, इस दौरान दिल्ली सरकार की शिक्षा मंत्री आतिशी ने चेंजमेकर्स को बाल अधिकारों और विकास के क्षेत्र में डीसीपीसीआर के पहले चिल्ड्रन चैंपियन अवार्ड से सम्मानित किया। इस प्रकार बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए डीसीपीसीआर ने इस अनूठे पुरस्कार द्वारा उन व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित एवं आभार ज्ञापित किया जिन्होंने बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं संरक्षण के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समारोह में पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए आतिशी ने कहा कि डीसीपीसीआर चिल्ड्रन चैंपियन अवार्ड के पुरस्कार पाने वाले लोग देशभर के उन असाधारण लोग में से हैं, जिन्होंने संघर्ष किया और व्यवस्था में कई चुनौतियों का सामना किया एवं वे सभी बच्चों के लिए जीवन में बदलाव लाने के लिए सदैव दृढ़ संकल्पित रहे। यह पुरस्कार देश के बच्चों की बेहतरी के लिए उनके प्रयासों और योगदान की पहचान है, यह पुरस्कार उन्हें नई ऊर्जा और उत्साह के साथ काम करने के लिए प्रेरित करेगा। अवार्ड की श्रृंखला में चिल्ड्रन श्रेणी को सबसे प्रेरणादायक श्रेणियो में से एक बताते हुए आतिशी ने कहा कि इतनी कम उम्र में बच्चों को अपने समुदाय में अपने समकक्षों को बेहतर जीवन प्रदान करने के लिए प्रयास करते देखना बहुत प्रेरणादायक है मसलन बालकनामा के बच्चे जगह-जगह के सड़क एवं कामकाजी बच्चों के मुद्दों पर अपने अखबार में छाप रहे है और उनके लिए आवाज उठा रहे है। उन्होंने कहा कि देश में कुछ ही लोग हैं जो

**शेष पृष्ठ 2 पर**

# जीवन कौशल कार्यशाला में, बालिका ने सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बीच अंतर को समझा, अपने बचाव की कार्रवाई की

**बालकनामा रिपोर्टरः काजल**

भले ही आज हम देश की विकास में नए-नए आयाम को जुड़ते हुए देख रहे हैं परंतु फिर भी हमें हमारे समाज में बाल यौन शोषण के कई मामले देखने को मिलते हैं। इन्हीं मामलों को कम करने के लिए सामूहिक प्रयास द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की जीवन कौशल कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं जिसके अंतर्गत उन्हें विभिन्न प्रकार के संवेदनशील मुद्दों के बारे में जानकारी देते हुए जागरूक किया जाता है। इसी क्रम में जयपुर की एक कच्ची बस्ती में भी बच्चों को सुरक्षित एवं असुरक्षित स्पर्श (गुड टच और बैड टच) के बारे में जागरूक किया गया। इस प्रकार की हुई जीवन कौशल कार्यशाला का परिणाम यह रहा की जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने उस कच्ची बस्ती का दौरा किया और विभिन्न बच्चों एवं समुदाय के लोगों से बात की तो काजल की भेंट 8 वर्षीय बालिका ममता (परिवर्तित नाम) से हुई। बातूनी रिपोर्टर ममता ने अपने बारे में बताते हुए कहा की उसकी माता घर छोड़कर चली गई और पिताजी को नशे की लत ने अपने वश में कर लिया इस प्रकार परिवार में ममता की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। अतः इस अवस्था में बालिका को उसकी दादी ने संभाला, इस प्रकार दादी यूं तो बालिका का ध्यान रखती है परंतु उसकी एवज में बालिका से भीख मंगवाती है और कबाड़ा बीनने के लिए भेजती है, इसके अलावा जब कभी दादी खाना नहीं देती तब उसे बस्ती में भीख मांग कर खाना भी पड़ता है। आगे बालकनामा रिपोर्टर से हुई चर्चा के दौरान बातूनी रिपोर्टर ममता ने बताया की उसके घर में उसकी दादी के अलावा दादी का एक भतीजा भी रहता है जिसकी उम्र लगभग 45 वर्ष के आसपास है। एक दिन जब ममता घर में अकेली सो रही थी तो उसने ममता को गलत तरीके से छूने की कोशिश की, इतना ही नहीं इस व्यक्ति ने बालिका को उठाकर दूसरी जगह ले जाने का भी जबरन प्रयास किया तब बालिका ने इसका प्रतिकार करते हुए जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया फलतः आसपास की झुग्गियों में रहने वाले लोगों ने बाहर आकर देखा और उस व्यक्ति को पक ड़कर बहुत पीटा और समझाइश दी। ममता ने चर्चा के दौरान बताया की कुछ माह पहले चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर पर दीदी ने हमें अच्छे एवं बुरे स्पर्श के बारे में जानकारी दी थी जिसको जानकर मैंने यह कदम उठाया और जब मुझे असहज महसूस होने लगा तो मैंने जोर-जोर चिल्लाना शुरू कर दिया और इस प्रकार मैंने अपनी आवाज उठाकर स्वयं का बचाव किया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# बस्ती में चिकन पॉक्स ने दी दस्तक

## कई बच्चे आये बीमारी की चपेट में

**बालकनामा रिपोर्टर : काजल,**
**बातूनी रिपोर्टर : कोमल**

जैसा कि हम सभी जानते है स्थानीय भाषा में छोटी या बड़ी 'माता' बोली जाने वाली बीमारी को 'चिकन पॉक्स' कहते हैं। जयपुर की एक कच्ची बस्ती में इस बीमारी से बच्चे लगातार प्रभावित हो रहे हैं। जयपुर की एक कच्ची बस्ती मांग्यावास में बालकनामा रिपोर्टर काजल ने दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या एवं अनुभव जानने के लिए बातचीत की तब 7 वर्षीय बालिका कोमल से पता चला कि उसे बहुत दिनों से बुखार,म खांसी और शरीर में छोटी-छोटी फुंसियां हो गई थी। बालकनामा रिपोर्टर ने बालिका से पूछा कि बस्ती में क्या और बच्चों को भी यह बीमारी हो रही है? तब बालिका कोमल ने बताया कि बस्ती में लगभग 10 से 15 बच्चों को यह बीमारी ने जकड लिया है और माता - पिता कामकाजी होने के कारण बच्चों को सुबह से ही घर से छोड़कर काम पर निकल जाते हैं जिससे उनकी उचित देखभाल भी नहीं हो रही है तथा बीमारी बच्चों में लगातार फैलती ही जा रही है इस बीमारी के दौरान बच्चों को तेज बुखार, खांसी और शरीर पर अलग - अलग आकार के दाने हो रहे है यह बीमारी सीधे संपर्क में आने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलती जा रही है इसके कारण बच्चे स्कूल भी नहीं जा पा रहे है जिस कारण उनका जीवन लगातार प्रभावित हो रहा है।

# बाल्यावस्था में आवश्यक है सही मार्गदर्शन, अन्यथा संपूर्ण जीवन होता है प्रभावित

**बालकनामा रिपोर्टरः शबीर शा,**
**बातूनी रिपोर्टरः अभय**

बाल्यावस्था हमारे जीवन की नींव होती है अतः जितनी मजबूत नींव होगी उतनी ही मजबूत इमारत हम उस नींव के आधार पर बना सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है की हमारे संपूर्ण जीवन काल में सबसे महत्वपूर्ण हमारा बाल्यकाल होता है अतः इसमें बच्चों की विशेष देखभाल एवं उचित मार्गदर्शन आवश्यक होता है फिर भी वर्तमान में सड़क पर काम करने वाले बाल श्रमिकों की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। इसी तरह सड़क पर जीवन यापन करने वाले अनेक बच्चे अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना अपने बाल्यकाल में करते हैं। इसी प्रकार के एक सड़क पर रहने वाले 11 वर्षीय कामकाजी बालक अभय (परिवर्तित नाम) की समस्या उसके जीवन एवं शिक्षा के मार्ग में बाधा बनकर खड़ी है। फिलहाल अभय जयपुर की एक कच्ची बस्ती में अपने अभिभावक एवं एक छोटी बहन के साथ किराए के मकान में एक छोटे से बंद अंधेरे कमरे में जीवन बसर कर रहा है। जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा ने जब एक कच्ची बस्ती

का दौरा किया तब अभय, बालकनामा रिपोर्टर को सड़क पर गुब्बारे बेचते हुए मिला तब अभय ने बताया कि जब वह 3 वर्ष का था तब उसके माता-पिता रोजगार की तलाश में टोंक जिले से जयपुर आ गए और यही रहने लगे। चर्चा के दौरान बालक अभय ने बताया कि वह पहले विद्यालय में नामांकित था और विद्यालय जाया करता था किंतु वह जिस विद्यालय में अध्ययन कर रहा था वह लड़कों के लिए केवल पांचवीं तक ही था उसके पश्चात शिक्षकों द्वारा बालक अभय का नाम विद्यालय से काट दिया गया और उसे आगे पढ़ने का मौका नहीं मिला। अभय ने बताया कि उसके माता-पिता ने उसकी शिक्षा के लिए कुछ प्रयास किया और दूसरे सरकारी विद्यालय में एडमिशन करवाने गए तो उन्होंने कागजों में कमी अर्थात पिता के नाम में अंतर बताकर विद्यालय में प्रवेश देने से मना कर दिया इस प्रकार दो से तीन बार विद्यालय के चक्कर काटने के पश्चात माता-पिता के अशिक्षित होने के कारण उन्होंने रुचि लेना बंद कर दिया और इस प्रकार मेरी माता मुझे अपने साथ खिलौने एवं गुब्बारे बेचने के लिए ले जाने लगी और अब मैं स्वयं अकेला ही सड़कों पर खिलौने एवं गुब्बारे बेचता हूं। अभय अभी सड़क पर हाथ में गुब्बारे से भरी छड़ी अपने कंधे पर उठाकर सुबह निकल जाता है और अपने बाल श्रम से कमाई आमदनी घर ले आता है हालांकि बालक ने पांचवी कक्षा तक पढ़ाई की है फिर भी वह गुब्बारे और खिलौने बेचने के अलावा कभी-कभी पेट भरने के लिए भीख मांगने को भी मजबूर है।

# सावधानी हटी, दुर्घटना घटी; सिलेंडर में आग लगने से दो झुग्गियां जलकर हुई खाक

**ब्यूरो रिपोर्ट**

जब बालकनामा पत्रकारों ने गुरुग्राम की अमुक बस्ती का दौरा किया तो देखा कि कुछ बच्चे काफी उदास बैठे हुए है तो पत्रकारों ने उनमें से एक बच्चे से बात करने का प्रयास किया तो उसने अपने बारे में बताते हुए कहा की मेरा नाम अरविंद (परिवर्तित नाम) है और मैं 14 वर्ष का हूँ एवं पांचवी कक्षा में पढ़ता हूँ अपने बारे में बताते हुए बालक ने बताया की वह गुडगांव में अपने माता-पिता के साथ एक झुग्गी बस्ती में रहता है। साक्षात्कार के दौरान बालक ने कहा की मेरे माता-पिता रोज सुबह से लेकर शाम तक काम पर जाते हैं और जब मम्मी कामकाज के लिए जाती है, तो हमारे लिए भोजन बनाकर जाती हैं साथ ही दोपहर का भोजन भी बनाकर रख कर जाती है। ऐसे ही एक दिन स्कूल से आने के बाद मुझे काफी तेज भूख लग रही थी लेकिन उस दिन माँ किसी कारणवश दोपहर का भोजन नहीं बना पाई थी तो मैं स्कूल से आया चूँकि मुझे काफी तेज भूख लग रही थी इसलिए मैंने चावल भगोने में धोकर गैस पर रख दिए और मैं दोस्तों के साथ घर से बाहर खेलने चला गया और चूल्हे ने अचानक से आग पकड़ ली मेरा ध्यान दोस्तों के साथ खेलने पर

लग गया और फिर मेरा ध्यान चावल और चूल्हे की तरफ नहीं पहुंचा, जिसके कारण सिलेंडर में आग लग गई और आसपास में रखें प्लास्टिक के बर्तन ,कपड़े आदि जलने लगे और सिलेंडर ने काफी तेजी से आग पकड़ ली और हम झुग्गी से लगभग 300 मीटर की दूरी पर खेल रहे थे। जब घर में काफी आग पकड़ ली तब जाकर हमें पता चला और हमें याद आया इतनी देर में झुग्गी ने आग पकड़ ली और धीरे-धीरे बढ़ती चली गई और बगल की झुग्गी में भी आग लग गई और जिसके कारण घर के जरूरी कागज, पैसे और कपड़े आदि जल गए आग जलने के दौरान दो झुग्गी जल गई और इस प्रकार काफी पानी डालकर आग बुझाई गई।

# बारात एवं शादियों में झूमर उठाने का कार्य कर रहे बच्चे, हो रहे शिक्षा से दूर

**बालकनामा रिपोर्टर : शबीर शा**

बाल्यकाल से ही विभिन्न प्रकार की विपरीत परिस्थितियों में जीवन यापन कर रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चे पैसे कमाने की लालसा के कारण शिक्षा से दूर हो रहे हैं। कहने का आशय यह है की जहां वर्तमान में शादी-ब्याह का सीजन अपने जोरो-शोरो पर है वहीं सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी बारात या शादी पार्टी के कार्यक्रमों में अपने छोटे-छोटे हाथों से झूमर एवं लैंप उठाने का कार्य कर रहे हैं। बातूनी रिपोर्टर अनुज ने बताया कि बस्ती में प्रतिदिन बदलते क्रम में लगभग 15 बच्चे अपने माता-पिता के साथ बारात या अन्य इसी प्रकार के कार्यक्रमों में झूमर एवं लैंप उठाने का कार्य कर रहे हैं। इसके लिए

ठेकेदारों के द्वारा सभी को कभी-कभी बैंड बाजे वाली ड्रेस भी दी जाती है और एक दिन के लगभग 200 से 500 रुपये मजदूरी दी जाती है, इस मजदूरी का निर्धारण बारात चलने की दूरी पर निर्भर करता है जब बारात में पैदल चलने की दूरी कम होती है तो उसके लिए 200 रुपये मजदूरी तथा जब दूरी ज्यादा होती है तो उसके लिए 500 रुपये दिए जाते हैं। बातूनी रिपोर्टर अनुज ने बताया की इस प्रकार के कार्यों में शामिल होकर बच्चे खुश है क्योंकि उनको इससे पैसे कमाने का मौका मिलता है और उन्हें एक जैसी ड्रेस पहने को भी मिलती है परंतु इस प्रकार के कार्यों में शामिल होने के कारण बच्चों का नियमित विद्यालय जाना छूट जाता है परिणामतः वह शिक्षा से दूर हो जाते हैं।

# बालकनामा सदस्यों ने साझा किया 2023 की मुख्य उपलब्धियां, याद किये खुशियों के पल

**पृष्ठ 1 का शेष**

दिन-रात बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए स्वयं को लगा देते हैं। ऐसे में यह अवार्ड उन सभी लोगों को एक नई ऊर्जा प्रदान करता है जिससे वे एक नए सफर की तरफ अपने कदम बढ़ाते हैं। यह बहुत ही प्रेरित करने वाली बात है कि जो बच्चे स्वयं मुश्किल परिस्थितियों से आते है और वह अपने बारे में ना सोचकर उन लाखों वंचित बच्चों के लिए अखबार निकाल रहे है जबकि इस उम्र में अधिकांश बच्चों का जीवन केवल पढ़ाई, मोबाइल, फोन या इंटरनेट के ईद-गिर्द घूमता रहता है। यह बच्चे अपनी समझ में एक अविश्वश्नीय बदलाव लाने के लिए कदम आगे बढ़ा रहे हैं, आतिशी ने अवॉर्ड पाने वाले पात्रों को बधाई देते हुए कहा कि आप सभी अपने समाज और बच्चों के अधिकारों के लिए ऐसे ही काम करते रहे, बालकनामा के पत्रकारों को भी चिल्ड्रन चैंपियन अवार्ड देकर श्री आतिशी ने सम्मानित किया। इसके अलावा आप सभी बाल हितैषी पाठकों के लिए और बालकनामा टीम के लिए खुशी की बात यह है कि 23 दिसंबर 2023 में गौतम नगर बेसमेंट में बालकनामा के ऑफिस में गैलरी का आरंभ हो गया है जिसमें बढ़ते कदम के और बालक नामा के पत्रकारों ने और चेतना संस्था के डायरेक्टर संजय गुप्ता और मुख्य अतिथि कैमिला एंड्रिया पिंजोन जिमेनेज (कोलंबियाई मॉडल और सौंदर्य प्रतियोगिता की खिताब धारक हैं, जिन्हें मिस वर्ल्ड कोलंबिया 2022 का ताज पहनाया गया था) ने रिबन काटकर बालकनामा की लाइब्रेरी का आरंभ किया है, यहाँ बालकनामा की पूरी कार्य यात्रा की झलक भी इस गैलरी में उपस्थित है।



बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# खुले में शौच करने को मजबूर बच्चे पर लगा चोरी का इल्जाम

**बातूनी रिपोर्ट - मोहम्मद खालिद, , बालकनामा रिपोर्ट - हंस कुमार, पश्चिम दिल्ली**

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार दिल्ली के शकूर बस्ती क्षेत्र में विजिट करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर मोहम्मद खालिद ने बताया कि चौदह वर्षीय रियाज (परिवर्तित नाम) शकूर बस्ती में रहता है और छठी कक्षा में पढ़ता है। एक दिन वह प्रातः काल शौच के लिए रेलवे पटरी के किनारे गया था वहां उसने देखा कि चार लड़के वहां पर खड़ी ट्रेन से लोहा चोरी करने की कोशिश कर रहे थे उन लड़कों की उम्र लगभक पंद्रह से सोलह वर्ष के आसपास रही होगी और वे सारे अपराधिक गतिविधियों में भी शामिल रहते है। आगे उसने बताया की अचानक उन लड़कों ने उसे उन्हें चोरी करते हुए देख लिया तो वो उन लड़कों से डर कर वहां से जाने लगा फिर अचानक उन चारो ने उसे पकड़ लिया और उसका हाथ मोड़कर धमकी दी की अगर उसने चोरी की बात किसी को बताई तो वे उसकी पिटाई करेंगे। वहां कुछ लोग और भी खड़े थे पर किसी ने उसकी मदद नहीं की इसके बाद वो घर चला गया फिर थोड़े समय के बाद भारतीय रेलवे के कुछ अधिकारी उसके घर आए और उस पर ट्रेन से लोहा चुराने का झूठा आरोप लगाया और उसे पकड़ कर अपने दफ़्तर ले गए। वहां उसने रेल अधिकारियों को समझाने का भरसक प्रयास किया की वह निर्दोष है परंतु उन्होंने बालक की एक न सुनी अंततः कुछ समय पश्चात उसके माता-पिता और पड़ोसी भी वहां पहुंच गए और उन्होंने अधिकारियों

को समझाया की उनका बच्चा रोजाना स्कूल जाता है और चेतना एनजीओ के शिक्षण केंद्र पर पढ़ता है, उन्हें ये भी बताया की उनका बच्चा उस दिन सुबह सार्वजनिक शौचालय में अधिक भीड़ होने के कारण रेलवे पटरी के किनारे शौच करने चला गया था इसके अलावा उसके पड़ोसियों ने भी अधिकारियों को समझाया की वो पढ़ने वाला छात्र है और मोहल्ले में उसकी साफ सुथरी छवि है साथ ही वो कभी गलत गतिविधियों में भी शामिल नहीं रहा फिर रियाज ने भी हिम्मत दिखाते हुए बताया की वहां पर चार लड़के ट्रेन से लोहा चोरी कर रहे थे और उन्होंने उसे धमकी दी थी किसी को न बताये अन्यथा वो लड़के उसकी पिटाई कर देंगे। अंततोगत्वा उसने अधिकारियों को समझाया की उन्हें गलत फहमी हुई है की उसने ही चोरी की है जबकि ऐसा बिलकुल नहीं हैं तब कहीं जाकर रेल अधिकारियों को विश्वास हुआ और उन्होंने उसे वहां से समझाइश देकर जाने दिया।

# शिक्षा के मंदिर में शिक्षक ही कर रहे बच्चों का तिरस्कार

## बच्चों के आत्मसम्मान को पहुंची ठेस

**बालकनाम रिपोर्टर: काजल, बातूनी रिपोर्टर: राधिका**

एक अच्छे शिक्षक की पहचान है कि छात्र उनसे डरें नहीं अपितु उनका सम्मान करे एवं उनकी क्लास का इंतजार करें इसकेअलावा निःसंकोच उनसे प्रश्न पूछें यहाँ तक कि माता-पिता जैसा ही प्रेम व विश्वास करें तथा शिक्षक को कभी भी बच्चों के प्रति शारीरिक एवं मानसिक हिंसा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। वैसे तो ये सब बाते सुनने में बहुत अच्छी लगती है लेकिन धरातल पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ अनुचित व्यवहार किया जाना भी किसी से छुपा नहीं है। जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने अगराना कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया और बच्चों से विद्यालय के संदर्भ में उनके अनुभव जानने का प्रयास किया तो बालिका राधा (परिवर्तित नाम) ने बड़ी उदासीनता के साथ कहा कि वैसे तो स्कूल में हमारा दाखिला हो गया और हमें स्कूल में जाना अच्छा भी लगता है इससे हमें बहुत खुशी मिलती है लेकिन वहां के टीचर हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते हमें 'कचरा' कहकर संबोधित करते हैं और यह भी कहा जाता है कि यह बस्ती के बच्चे हैं इनका पढ़ाई में कोई रुझान नहीं है यह सिर्फ मस्ती करने के लिए आते हैं इनको कुछ नहीं आता, शिक्षकों से बार-बार हमें इस प्रकार के ताने सुनने को मिलते हैं जो की बिल्कुल अच्छे नहीं लगते और कभी - कभी तो मेरा मन करता है कि मैं विद्यालय जाना ही बंद कर दूं लेकिन हमें चेतना के भैया ऐसा करने से मना करते है और इसके लिए वो एक बार हमारे साथ में स्कूल जाकर टीचर को निवेदन करके भी आये की बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार बिलकुल ना करें।

# गंदे गटर के कारण बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

**ब्यूरो रिपोर्ट**

गुड़गांव की बस्तियों में जब बालकनामा के पत्रकार पहुंचे तो पत्रकारों ने देखा कि बस्ती में रहने वाले लगभग 30 बच्चे ऐसे थे जो जुकाम, खांसी एवं बुखार आदि से ग्रसित थे। पत्रकारों ने जब खांसी, जुकाम, बुखार आदि होने का कारण जानने का प्रयास किया तो बस्ती में ही रह रही 9 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम इस बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। हम रोजाना स्कूल जाते हैं पर सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस बस्ती के आगे एक ऐसा रास्ता है कि जहां से सभी लोग आते - जाते हैं लेकिन उस रास्ते में ही एक बड़ा - सा गटर है जो हमेशा भरा रहता है और आस -पास की नालियों का पानी भी उस रास्ते में भरा रहता है और उस गटर के पानी में आसपास का कचरा एवं मलमूत्र जमा रहता है पर चिंता का विषय यह है की उस रास्ते के बगल से भी कोई ऐसा रास्ता नहीं है कि कोई निकल सके इसलिए सभी लोग बड़ा छोटा ईंट का टुकड़ा या पत्थर रख कर उस रास्ते से निकलते हैं पर कभी-कभी दुर्भाग्यवश पानी इतना ज्यादा भर जाता है कि वह ईंट भी डूब जाती है और जिसके कारण वहां से आने - जाने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है पर विडंबना यह है की वह ही केवल एकमात्र नजदीकी रास्ता है जहां से

निकलकर जाना पड़ता है वैसे अन्य रास्ते भी हैं पर वह काफी दूर है जिनकी दूरी लगभग डेढ़ किलोमीटर की है जिसके कारण वहां जाने में काफी समय लगता है। जब हम इस रास्ते से निकलते हैं तो हम बच्चों को पैर में बड़ी-बड़ी पन्नी बांधकर उस रास्ते से जाना पड़ता है पर तब भी पैर गंदे हो जाते हैं और इतनी दुर्गंध आती है कि बिल्कुल सहन नहीं होती परिणामतः ऐसे दूषित वातावरण के कारण बस्ती के व आसपास के लोग बीमार पड़ रहे हैं और जिसके कारण बस्ती में रहने वाले बच्चे और हम दो हफ्ते से स्कूल नहीं जा पाए हैं परन्तु आसपास के लोग, स्थानीय नेता एवं प्रशासन के कानों में जूं तक नहीं रेंग रही है फलतः वो इसको ठीक नहीं करवाते हैं जिससे हम बच्चों का जीवन प्रभावित हो रहा है।

# ट्यूशन पढ़ाने के बहाने बच्चों के माता-पिता से ऐंठा जा रहा धन

**बातूनी रिपोर्टर - रामजी, बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार**

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार दिल्ली के शिवाजी पार्क क्षेत्र में विजिट करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर राम जी ने बताया कि उनके क्षेत्र में इन दिनों एक व्यक्ति खुद को अध्यापक बताकर बच्चों से फीस लेकर उन्हें ट्यूशन पढ़ा रहा है। शिवाजी पार्क क्षेत्र में ज्यादातर आबादी झुग्गी बस्ती में रहती है और यहां रहने वालो की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है की वो प्रतिमाह फीस दे सके फिर भी वे अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य की खातिर तीन सौ रुपए मासिक ट्यूशन फीस दे रहे है। यदि कोई बच्चा ट्यूशन की छुट्टी कर लेता है तो अध्यापक उससे दस रुपए फाइन ले लेता है। बालक रामजी ने बताया कि अध्यापक अपने ट्यूशन में ड्राइंग के लिए बच्चो को ड्राइंग कॉपी लाने के लिए मना करते है और सबसे पांच-पांच रुपए लेकर ड्राइंग शीट देते है और मना करने पर बहुत डांटते हैं। रामजी ने बताया कि उस तथाकथित अध्यापक ने इलाके के कुछ बच्चो के माता- पिता को दिल्ली नगर निगम में नौकरी लगवाने का झांसा भी दिया हुआ है और कुछ लोगो से इस एवज में दस हजार रुपए भी वसूल लिए है। इस कारण ज्यादातर अभिभावकों को लगता है की वो एक सही और अच्छा इंसान है, जिस वजह से वे उसे ट्यूशन की मासिक फीस के तौर पर तीन सौ रुपए प्रतिमाह दे देते है। इसके अलावा बहुत से अभिभावकों ने उनके पास अपने बच्चे भेजने से मना कर दिया लेकिन फिर वह उन पर दबाव बनाता है कि यदि उसके पास ट्यूशन पढ़ने नहीं भेजा तो उनका बच्चा परीक्षा में कम अंक लाएगा

या फेल हो जाएगा। वो खुद को दिल्ली के सरकारी स्कूल का पूर्व अध्यापक बताता है लेकिन आईडी मांगने पर गोलमोल जवाब देकर बात को टाल देता है और बच्चो ने जब उससे उसका नाम, मोबाइल नंबर इत्यादि पूछा तो वो भी सही से नहीं बता पाया। उसने आगे बताया कि अध्यापक का अंग्रेजी और हिंदी विषयों को लिखने और पढ़ाने का तरीका भी सही नहीं है। ट्यूशन में पढ़ने वाली एक लड़की को उन्होंने लीडर बनाकर उससे आई कार्ड बनवाने के नाम पर डेढ़ सौ रुपए ले लिए और उसे आई कार्ड भी नहीं दिया। इलाके के लोग इस अध्यापक के रवैये से काफी परेशान है और ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चो को उनके पास ट्यूशन पढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि वहां पढ़ने से उनके बच्चो की शैक्षणिक प्रगति ना के बराबर है। बच्चो के माता -पिता कम पढ़े लिखे है, इस वजह से किसी भी बाहरी व्यक्ति पर तुरंत विश्वास कर लेते है पर फिर भी वे अभी दूध का दूध और पानी का पानी होने का इंतजार कर रहे है।

## जिंदगी के सफर में आते है कई उतार-चढ़ाव

# आखिरकार मिला विद्यालय में फिर से प्रवेश

**बातूनी रिपोर्टर हसीना, रिपोर्टर किशन**

गुड़गांव की झुग्गियों में रहने वाली रानी (परिवर्तित नाम) अपने बारे में बताती है की मैं वर्तमान में 13 वर्ष की हूँ, मेरे घर में 7 सदस्य हैं और मैं अपने माता-पिता के साथ गुड़गांव में रहती हूँ। हम तीन बहन और दो भाई और माता-पिता है दो बहनों की शादी हो गई है। माताजी कोठी में कामकाज करने के लिए जाती है और पिताजी बिल्डिंग में मिस्त्री का काम करते हैं। कुछ समय पहले की बात है जब मेरी एक बहन की शादी नहीं हुई थी तो एक दिन मेरी बहन घर के बाहर खड़ी हुई थी और अचानक एक बच्चे ने मेरी बहन को काट लिया और उस बच्चे को शायद कोई बीमारी थी इसलिए दीदी को काटने के बाद काफी बीमार पड़ गई और हमारे पास दीदी का इलाज करवाने तक के पैसे नहीं थे तो रिश्तेदारों से पैसे कर्जा लिया, गुड़गांव-दिल्ली जैसे शहरों केअस्पतालों में इलाज करवाने में अधिक पैसा लग रहा था और वैसे ही हमारे पास इतना पैसा नहीं था कि हम इलाज करवा पाए। इस कारण हम दीदी को गांव ले गए और गांव के अस्पताल में इलाज करवाया इस प्रकार काफी इलाज करवाने के बाद दीदी ठीक हो गई पर हमें गांव में दो साल इलाज करवाने में लग गए जिसके कारण मेरा स्कूल से नाम कट गया। दीदी की तबीयत ठीक होने के बाद हम सब गुड़गांव आ गए और फिर माताजी रोजाना कामकाज के लिए जाने लगी पर मेरा स्कूल से नाम कट गया था जिसके कारण मेरा स्कूल जाना बंद हो गया पर कुछ दिन बाद चेतना संस्था की दीदी मिली, दीदी ने मुझे चेतना संस्था के बारे में और बढ़ते कदम के बारे में बतायाऔर अपने पास पढ़ने के लिए अपने संपर्क में जोड़ लिया और फिर मैं रोजाना दीदी के पास पढ़ने के लिए जाने लगी कुछ दिनों बाद दीदी ने मेरा स्कूल में दाखिला करवा दिया।अब वर्तमान में मैं रोजाना स्कूल जाती हूँऔर वर्तमान में पांचवी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रही हूँ और मैं काफी खुश हूँ।

# घर की जिम्मेदारियों के बोझ बना बाधा, छोड़ना पड़ा स्कूल

**बालकनामा रिपोर्टरः काजल,**
**बातूनी रिपोर्टरः रोहित**

बालकनामा रिपोर्टर जब कांटेक्ट पॉइंट विजयसिंहपुरा का दौरा करने जा रही थी तो उन्हें बस्ती में 13 वर्षीय बालक रोनित (परिवर्तित नाम) रास्ते में मिला, उसके हाथ में कुछ चद्दरों की पोटली थी अर्थात वह चद्दर (बेडशीट) बेचने के लिए कहीं जा रहा था। जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने बालक से पूछा कि यह काम क्यों करते हो और स्कूल क्यों नही जाते हो? तब बालक रोनित ने बताया कि मेरे तीन भाई-बहन है और उनका स्कूल हमारी बस्ती से बहुत दूर है इसलिए उनको रिक्शे से आना-जाना पड़ता है तो उनको स्कूल भेजने के लिए रोजाना किराया देना होता है और मेरे पिता जो कमाते है उसे शराब पीने में खर्च कर देते हैं यहाँ तक की घर का खर्चा भी बड़ी मुश्किल से चलता है। आगे बालक ने बताया की मेरा भी स्कूल में दाखिला हुआ था, लेकिन मैनें घर की जिम्मेदारियों के भारी बोझ के कारण विद्यालय छोड़ दिया क्योंकि मुझे परिवार की मदद करनी थी इसके बाद बालकनामा रिपोर्टर ने पूछा कि आप ये बेडशीट कहां से लाते हो और इनसे रोज के कितने रूपए कमा लेते हो? तब बालक ने बताया कि हमारी बस्ती में वाराणसी के एक ठेकेदार आते हैं जो की बेडशीट थोक के भाव में बेच देते हैं अर्थात हम एक बेडशीट 150 रू में लेते हैं और बस्ती के आसपास की जगह पर फेरी लगाकर 200 से 250 रुपए में बेडशीट बेच देते हैं, इस प्रकार हमें एक बेडशीट पर 50 से 100 रुपए तक का लाभ मिल जाता है और हम एक दिन में लगभग 2 से 3 चदर बेच पाते है। अब इसे विपरीत परिस्थिति कहिये या दुर्भाग्य अंततः बालक रोनित को अपने भाई-बहनों को स्कूल भेजने और घर की जिम्मेदारियों को वहन करने के कारण स्वयं शिक्षा वंचित हो होने के लिए मजबूर होना पड़ा।

# परचून की दुकान खोलकर बच्चे चलाते हैं घर का खर्चा

**बातूनी रिपोर्टर खुशबू, रिपोर्टर किशन**

बालकनामा के पत्रकार गुड़गांव की एक बस्ती में पहुंचे और पत्रकारों ने देखा कि वहां पर एक बच्ची सब्जी बेचने का काम कर रही है। पत्रकारों ने जब उस बच्ची के पास जाकर उसके बारे में जानने का प्रयास किया तो बालिका ने अपने बारे में बताते हुए कहा की मेरा नाम जानकी (परिवर्तित नाम) है, मैं गुड़गांव में अपने परिवार के साथ एक अपनी छोटी सी दुकान में रहकर दुकान चलाते हैं, हमारे घर में 6 सदस्य हैं। वैसे मूलरूप से हम उत्तर प्रदेश के शिकोहाबाद के जहांगीरपुरी के रहने वाले हैं, पहले वहां पिताजी खेती का काम करते थे पर वहां पर पूरे परिवार का खर्चा नहीं चल पाता था जिस कारण हम गुड़गांव आ गए और यहाँ आकर हमने एक छोटा सा कमरा किराए पर लिया और फिर धीरे-धीरे यहाँ भी काफी दिक्कत होने लगी क्योंकि यहाँ भी कोई कामकाज नहीं मिलाइस प्रकार कमरे के किराये के पैसे देने के लिए भी नहीं थे पर पिताजी बेलदारी करके जैसे-तैसे घर का खर्चा और घर का किराया देते थे। इसी कारण हमने भी कुछ दिन बाद एक छोटी सी दुकान खोल ली जिसमें हम सब्जी बेचने का काम करते थे और सुबह से शाम तक सब्जी बेचकर घर का खर्चा चलाते थे। यहाँ हम में से कोई भी स्कूल नहीं जाता था और आसपास में कितनी दूर स्कूल है वह भी जानकारी नहीं थी परन्तु जब हम जहांगीरपुरी में रहते थे तो वहां पर हम लोग कक्षा 6 में पढ़ने के लिए भी जाते थे पर वहां पर घर की स्थिति ठीक नहीं थी जिस कारण हमारा स्कूल भी छूट गया और हम गुड़गांव आ गए। अब वर्तमान में हमने सब्जी की दुकान के साथ-साथ एक छोटी सी परचून की भी दुकान कर ली है जिसमें आटा, दाल, चावल आदि बेचते हैं। जानकी ने और विस्तार से बताया कि हमें स्कूल जाने का बहुत मन करता था पर पर इस अनजान शहर में कोई सहारा देने के लिए नहीं था। कुछ दिन बाद चेतना संस्था की दीदी रास्ते से निकल रही थी, उन्होंने हमें सब्जी बेचते हुए देखा और उन्होंने हमसे बात की। उन्होंने अपने बारे में बताया और हमने अपने बारे में विस्तार से उन्हें बताया और हमने चेतना संस्था और बढ़ते कदम के बारे में भी जाना और फिर हम रोजाना दीदी के पास पढ़ने के लिए जाने लगे और वहां पर ड्राइंग, खेलकूद और पढ़ाई भी करने लगे, वहां जाने के बाद हमारे काफी दोस्त भी बने अब हमें अधिकतर लोग जानते हैं अब हम रोजाना दीदी के पास पढ़ने के लिए जाते हैं और अब जल्दी ही हमारा स्कूल में पुनः दाखिला भी हो जायेगा।

# अधेड़ व्यक्ति ने किया नाबालिग बच्ची का पीछा, पिता व भाई ने सबक सिखाकर की पुलिस में शिकायत

**बातूनी रिपोर्टर - नाजिया परवीन,**
**बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार**

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार दिल्ली के जखीरा क्षेत्र में विजिट करने गए तो उन्हे वहां की बातूनी रिपोर्टर नाजिया परवीन ने बताया कि दस वर्षीय बालिका निशु (परिवर्तित नाम) जखीरा में रहती है और पांचवी कक्षा में पढ़ती है, उसके यहां काफी सारे ऐसे परिवार है जिनके पास एलपीजी गैस सिलेंडर नही है या उनकी आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है की वे सिलेंडर खरीदने में असमर्थ है। वे लोग मिट्टी के चूल्हों पर खाना पकाते है जिसमे लकड़ी की आवश्कता पड़ती है। वह लोग पास के ही जंगल से सूखे हुए पेड़ों की टहनियां काट कर जलावन के लिए घर ले आते हैं। इसी तरह एक दिन निशु के घर मे लकड़ी खत्म हो गई तो वह अपने दोस्तों को लेकर लकड़ी लाने जंगल की तरफ चली गई, जब वह लकड़ी लेकर वापस आ रही थी तो रास्ते में उसकी एक दोस्त को टॉयलेट लगा तो वह सभी पटरी के पास रुक गए और उसकी दोस्त टॉयलेट करने चली गई। जब उसकी दोस्त टॉयलेट करके वापस आ रही थी, तो उसके पीछे से एक अधेड़ आदमी आ रहा था, उन सभी को यह बात संदेहास्पद लगी तो वह सब वहां से तेजी से घर की ओर जाने लगे। वह आदमी भी तेजी से उनका पीछा करते हुए आ रहा था, घर पहुंचकर उसने सारी बात अपने पिता को बताई तो उसके पिता ने उसे दुबारा उस रास्ते पर जाने को कहा जहां वह व्यक्ति उसका पीछा कर रहा था। फिर वह अपने दोस्तो के साथ उसी स्थान

पर गई जहाँ वो व्यक्ति उसका पीछा कर रहा था, कुछ समय इंतजार करने पर वह व्यक्ति दोबारा वहां पर आ गया और पीछा करने लगा, इतने में उसके पिता ने उस आदमी को पकड़ लिया और उससे पीछा करने का कारण पूछा तो वह गुमराह करने की कोशिश करने लगा, निशु के पिता ने उसे डांटते हुए आइंदा ऐसी हरकत नहीं करने को कहा तो वह व्यक्ति हाथापाई पर उतर आया, फिर उसके पिता ने उस व्यक्ति को दो तीन-थप्पड़ जड़ दिए, अंततः उसने निशु के पिता माफी मांगी और दुबारा ऐसी हरकत न करने का आश्वासन देकर वहां से चला गया। मामला सुलझने के बाद निशु के पिता भी अपने काम चले गए। कुछ दिन तक तो उस व्यक्ति ने निशु का पीछा नही किया और वहां दिखा भी नहीं, लेकिन तीन-चार दिन बाद उसने फिर से पीछा करना शुरू कर दिया। इस बार निशु ने अपने पिता को न बताकर अपने बड़े भाई को इस बारे में बताया, उसका भाई उसे लेकर उस रास्ते पर गया तो वहां वह व्यक्ति फिर से उसका पीछा करने लगा, जैसे ही वह निशु के पास पहुंचा तो निशु के भाई ने उस व्यक्ति को पकड़ लिया और उसकी जमकर पिटाई कर दी और पुलिस में भी इस घटना की शिकायत कर दी, उसके बाद से उस व्यक्ति ने निशु का पीछा करना छोड़ दिया।



बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# छोटे से जीवन में काफी जद्दोजहद के बाद बालिका पुनः शिक्षा की ओर लौटी

बातूनी रिपोर्टर- तबस्सुम, रिपोर्टर- किशन

जब गुड़गांव की झुग्गी बस्तियों में बालकनामा पत्रकार पहुंचे और पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाली कोमल (परिवर्तित नाम) से मिले तो कोमल से बातचीत की एवं उनका परिचय जाना तब कोमल ने अपनी कहानी को विस्तार से बताया की मेरा नाम कोमल है मैं वर्तमान में गुड़गांव की झुग्गी बस्तियों में अपने परिवार के साथ रहती हूँ, मेरे घर में दो बहन, दो भाई और मेरे माता-पिता सहित कुल 6 सदस्य हैं। हमारे पास मेरी एक मौसी की भी लड़की रहती है यानी जो मेरी मौसेरी बहन है वह भी हमारे पास ही रहती है क्योंकि मौसी की मृत्यु हो गई है इस प्रकार मौसी की लड़की को मिलाकर हम 6 सदस्य हैं। आगे कोमल कहती है की मैं वर्तमान में 12 वर्ष की हूँ, मेरा जन्म चंडीगढ़ में हुआ था क्योंकि हम पहले चंडीगढ़ में ही रहते थे एवं मेरे माता-पिता वही कामकाज करते थे और घर का खर्चा चलाते थे। कोमल दुखी होकर कहती है की मेरे पिताजी पूरे दिन में जितना भी पैसा कमाते थे वह अपने दोस्तों के साथ उन कमाए हुए पैसों की शराब पी जाते थे जिसके कारण माता जी काफी परेशान हो गई थी इस प्रकार घर का खर्च चलाने में काफी समस्याएं आ रही थी। फिर माताजी और पिताजी में काफी झगड़े हुए और झगड़ा होने के बाद माताजी गुड़गांव आ गए, इस प्रकार गुड़गांव में आकर जलवायु टावर के नजदीक झुग्गी बस्ती में रहने लगे। कुछ दिन झुग्गी बस्ती में रहने के बाद माताजी ने कामकाज ढूंढा और कुछ दिन बाद माताजी को बिल्डिंग में घर का घरेलू कामकाज करने को मिल गया और पापा को भी बेलदारी का काम मिल गया अब वह दोनों रोजाना कामकाज पर जाने लगे पर एक दिन मैंने माता जी को और

पिताजी से बात करके कहा कि मुझे भी स्कूल जाना है मेरा भी स्कूल में दाखिला करवाए तो पिताजी ने सरकारी स्कूल मेरा और भाई बहन का भी सरकारी स्कूल में पहली कक्षा में दाखिला करवाया कुछ महीनो तक मैं और मेरे भाई-बहन स्कूल रोजाना पढ़ने के लिए जाने लगे पर गांव में कुछ समस्या होने के कारण माताजी और पिताजी के साथ हमें भी गांव जाना पड़ा। गांव में रहते हुए हमें अधिक महीने बीत गए और जिसके कारण हमारा स्कूल छूट गया और गांव की समस्या खत्म होने के बाद जब हम अपने माता-पिता के साथ दोबारा गुड़गांव आए और स्कूल गए तो पता चला कि स्कूल से नाम कट गया था जिसके कारण हम घर पर ही रहने लगे, एक दिन चेतना संस्था के भैया दौरा करने के लिए आए और मुझसे बात करने लगे पर मैं डर गई थी, मैंने सोचा कि शायद ये पकड़ने वाले हैं इस कारण मैं अपनी माता जी के पास पहुंच गई और माताजी घर का कामकाज कर रही थी माता जी ने भैया से बात की और भैया ने अपने बारे में और चेतना संस्था के बारे में माता जी को जानकारी दी और बताया कि हम बच्चों को पहले अपने पास जोड़ते हैं और फिर उन्हें स्कूल की और भेजते हैं यह सुनकर मेरी माता जी ने मुझे और मेरे भाई बहन को भी चेतना संस्था के भैया के पास जोड़ दिया और हम रोजाना भैया के पास पढ़ने के लिए जाने लगे, मेरी यहाँ पर फाइल भी बनी और जो मुझे नहीं आता था मैंने वहां पर हिंदी, इंग्लिश और मैथ भी सीखी। कोमल ने बताया कि यदि मुझे चेतना संस्था के भैया नहीं मिलते तो मैं शिक्षा की और नहीं बढ़ पाती और जैसे मेरा पहले स्कूल में पहली कक्षा से नाम कट गया था तो मैंने सोचा कि अब शायद मैं शिक्षा को और प्राप्त नहीं कर पाऊंगी पर ऐसा नहीं हुआ और मैं भैया के पास रोजाना पढ़ने के लिए आने लगी, अब मैं काफी खुश हूं कि मैं रोजाना स्कूल जाती हूं और वर्तमान में मैं कक्षा तीन में अध्यनरत हूँ।

# लड़कियों के सर्वांगीण विकास में बाधा बना लैंगिक भेदभाव

बातूनी रिपोर्टर अफसाना, रिपोर्टर सरिता

सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत मेहनती होते हैं जिनमें एक बच्ची जिसका नाम अफसाना है जो 11 वर्ष की है, जब हमारे बालकनामा पत्रकारों को अफसाना के बारे में पता चला तो उन्होंने अफसाना से बात की जिसके अंतर्गत बालिका ने बताया कि मेरी 3 बहनें है और एक भाई है अतः हम कुल 4 भाई-बहन हैं। अफसाना ने बताया की उनकी माता जी घरों में झाड़ू -पोछा और खाना बनाने का काम करती है उसके पिताजी गाड़ी साफ करने का काम करते हैं। दुखी मन से बालिका ने कहा की हम तीन बहने होने के कारण पढ़ाई नहीं कर पाते हैं और मैं सबसे बड़ी हूँ इस कारण मुझे घर को भी संभालने के साथ साथ छोटे भाई-बहनों को भी संभालना होता है अतः इस कारण हम चाह कर भी पढ़ाई नहीं कर पाते हैं और दुर्भाग्य की बात यह है की हमारे माता-पिता हमें भेदभाव की नजरों से देखते हैं कि तुम लड़की हो इसलिए तुम घर का ही काम करो और तुम्हारा भाई स्कूल पढ़ने जाएगा आगे कहते है हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि तुम सभी को पढ़ा सकें जिस कारण अफसाना का मन रूठ जाता है और अफसाना बहुत दुखी हो जाती है। अफसाना को बहुत बुरा लगता है कि हमारा एक भाई स्कूल पढ़ने जाता है और हम तीनों बहनें घर पर रहते हैं। इसके अलावा माँ हमें कुछ अच्छा खाने को भी नहीं देती है और हमारे भाई को वह सब कुछ देती है जो उनके पास नहीं भी होता है, वह उनकी सारी इच्छाएं पूरी करती है और हमारी एक भी इच्छाएं पूरी नहीं करती है। यहां तक की त्योंहारों पर हमें नए कपड़े भी नहीं दिलवाती है और भाई को हर त्यौहार पर नए कपड़े दिलवाती है।

कुल मिलाकर हम यह कहना चाहते हैं कि हमारी माता-पिता हमसे जरा सा भी प्रेम नहीं करते हैं और हम तीनों बहनों से भेदभाव करते है। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने अफसाना से बातचीत की और पूछा - अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या करना चाहोगे ? फिर अफसाना ने बताया कि अगर मुझे एक मौका मिले तो मैं एक बहुत अच्छी अध्यापक बनना चाहूंगी और किसी बच्चों में भेदभाव नहीं करूंगी सभी बच्चों को समान पढ़ाऊंगी और एक समान शिक्षा दूंगी इसीलिए मैं कहुंगी - "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।"

# आखिर कब मिलेगा हम झुग्गी के बच्चों को पीने का शुद्ध पानी ?

रिपोर्ट राजकिशोर

बालकनामा पत्रकार ने जब देखा की गुड़गांव जिले में ही जेएमडी क्षेत्र के पीछे वाली झुग्गी में एक होद से सब पानी पी रहे हैं क्योंकि इस झुग्गी के लोगों को पानी सम्बंधित योजना का कोई लाभ नहीं मिल पा रहा हैं क्योंकि यह गांव से बाहर सरकारी जमीन पर अतिक्रमण वाले क्षेत्र पर झुग्गी में रह रहे हैं इस वजह से इनको जल नल योजना के अंतर्गत इन लोगों को पानी नहीं मिल रहा है और तो और एक ही होद से लगभग 1000 लोग पानी पीते हैं। कभी कभी लोगों को पानी की इतनी किल्लत हो जाती है की उन्हें मजबूरन अन्य माध्यम से जल खरीदना पड़ता हैं और उनसे ही वह अपना खाना बनाते हैं और उनसे ही अपना बर्तन साफ करते हैं। इस झुग्गी में मात्र एक ही होद है, गर्मी के मौसम में तो इन लोगों का और बुरा हाल हो जाता है क्योंकि गर्मी के मौसम में बहुत जल्दी ही पानी खत्म हो जाता है जिससे कि वह लोग और भी ज्यादा

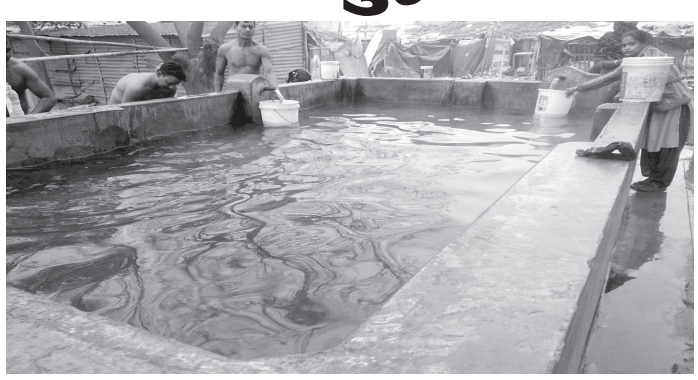

परेशान हो जाते हैं। यहां अक्सर पानी के लिए लड़ाई-झगड़ा भी होने लगते हैं और जब ठेकेदार को यह सब जाकर बोलते हैं तो ठेकेदार खुद ही कहता है कि गर्मी का मौसम है तो पानी तो खत्म होगा ही और सारे लोग काम करके आते हैं तो नहाते हैं पानी लेकर जाते हैं अपने घर पर और वह द्वारा पानी भी नहीं चलता है इस वजह से नल का जल लोगों के घरों में नहीं पहुंच रहा है। हौद का पानी खुला रहता है जिससे उसमें धूल मिट्टी कई चींटी और कीड़े मकोड़े गिरते रहते हैं और कई तरह की बीमारियां भी इससे उत्पन्न हो जाती है। दर्जनों परिवार पानी नहीं होने के कारण दूसरी जगह पलायन कर रहे हैं। झुग्गी के लोगों का कहना है कि हम लोग जो खुले में नहाते हैं इस वजह से हम लोगो को अच्छा नहीं लगता है, लोगो ने कहा की हम चाहते है की हमें साफ स्वच्छ गुणवत्तापूर्ण पानी पीने को मिले उसके लिये यहाँ या तो शुद्ध पानी के टैंकर भेजे जाएं या एक-दो नल लगा दिया जाये।

# बच्चे कर रहे हैं बाल मजदूरी, तोड़ते है ईट व उठाते है मलबे का बोझ

ब्यूरो रिपोर्ट

गुड़गांव की एक बस्ती में बालकनाम के पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाले एक बच्चे से बात की तो बालक ने बताया की भैया हमारे घर के थोड़ी सी आगे अधिकांश बच्चे बेलदारी का काम करते हैं। यह बच्चे अपने माता-पिता के साथ आ जाते हैं और यह बच्चे 14 और 15 वर्ष तक के होते हैं यह रोजाना अपने माता-पिता के साथ तरह-तरह का काम करने में मदद करते हैं जैसे ईट को सर पर रखना और पहले या दूसरी मंजिल तक पहुंचाना। मिट्टी को तसले में रखकर मंजिलों तक पहुंचाना, जो मकान की टूटी हुई ईंटें होती है हथौड़े से उन ईंटों में से सीमेंट हटाकर ईंट को सही करते हैं। यह बच्चे रोजाना सुबह से शाम तक अपने माता-पिता के साथ काम करते हैं इन बच्चों को भी 300 रोजाना मजदूरी के रूप में मिलते हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो अपने माता-पिता से अलग यानी दूसरे स्थान पर जा जाकर बेलदारी का कामकाज करते हैं पर जब वह तसला सर पर रखते हैं तो सर पर फोड़ा और सर दर्द जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है पर कभी-कभी यह भी होता है कि ठेकेदार समय पर पैसे नहीं देता है इस कारण बच्चों को इन परेशानीयों से जूझना पड़ता है फिर काफी दिन बीतने के बाद उन्हें पैसे मिलते हैं।

# नदी से मछलियां पकड़ने के भंवर में फंसा बचपन, शिक्षा से हो रहे दूर

रिपोर्टर किशन

जब बालकनामा पत्रकार झुग्गी बस्ती में पहुंचे तो झुग्गी बस्ती में अधिकतर बच्चे तरह-तरह का कामकाज कर रहे थे। जैसे कबाड़ा छांटना और घर का घरेलू कामकाज करना, पर जब बस्ती में और कुछ बच्चों से जाना की इस बस्ती में इतने ही बच्चे रहते हैं? तो बच्चों ने बताया नहीं कुछ बच्चे नदी की तरफ भी गए हैं और वो वहां पर मछली पकड़ते हैं। इस विषय पर पत्रकारों ने विस्तार से जानने का प्रयास किया कि बच्चे मछली पकड़ के कहां से लाते हैं? और मछली पकड़ने के बाद क्या करते हैं? तो फिर झुग्गी बस्ती में रहने वाली एक बालिका ने बताया की जिस झुग्गी बस्ती में हम सब बच्चे रहते हैं इस स्थान पर लगभग 35 झुग्गियां मौजूद है। अधिकतर बच्चे अपने घर में घरेलू कामकाज और कबाड़ा छाँटने का काम करते हैं पर लगभग 40 से अधिक बच्चे नदी में मछली पकड़ने के लिए जाते हैं। हमारी बस्ती के बगल में एक नदी स्थित है, उस नदी में काफी मछलियां मौजूद हैं। झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चे रोजाना उस नदी में मछली पकड़ने के लिए जाते हैं, आखिरकार पत्रकार उन बच्चों के पास पहुंचे जो रोजाना मछली पकड़ने के लिए जाते हैं फिर एक बालक से बात करने के दौरान बालक ने और विस्तार से बताते हुए कहा की हम रोजाना इस नदी में मछली पकड़ने के लिए आते हैं जब सुबह-सुबह हमारे माता-पिता कबाड़ा बीनने के लिए निकल जाते हैं तो हम इस नदी में मछली पकड़ने के लिए आ जाते हैं। हम जब मछली पकड़ते हैं तो हमारे हाथ में एक मच्छरदानी होती है और एक मच्छरदानी को एकसाथ दो साथी पकड़ते हैं, हम रोजाना 15 से 20 किलो मछली पकड़ लेते हैं चाहे वह छोटी मछली हो या बड़ी, हांलाकि जब हम मछली पकड़ रहे होते हैं तो उस समय नदी मैं डूबने का भी डर रहता है, मछली पकड़ने के लिए तीन साथी की जरूरत पड़ती है दो नदी में से मछली पकड़ के लाते हैं और एक व्यक्ति थैली में मछली को डालता है। जब हम नदी में से मछली पकड़ रहे होते हैं तो नदी के नीचे काफी पत्थर, घरेलू पदार्थ भी मौजूद रहते हैं जो हमारे पांव में चुभते हैं। जब हम मछली पकड़ लेते हैं तो पहले हम तीनों साथी बराबर-बराबर बाँटते हैं और इन मछली में से बड़ी और छोटी भी पाई जाती हैं जब हमारे पास छोटी मछली आती है तो हम वह घर में बना लेते हैं और बड़ी मछली को झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोगों को बेच देते हैं जिससे कुछ पैसे हमें मिल जाते और वह हमारे घर के काम में आते हैं।

# पिता लगाते हैं मूंगफली की रेहड़ी, बालक करता है पढाई के साथ पिता की मदद

बातूनी रिपोर्टर बादल, बालकनामा रिपोर्टर सरिता

बालकनामा पत्रकार द्वारा एम.आर. टावर का दौरा करने पर पता चला कि वहां एक बालक बहुत मेहनती है जिसका नाम बादल (परिवर्तित नाम) है और वह 14 वर्ष का है। साक्षात्कार के दौरान बालक ने बताया की मेरे पापा अधिक बूढ़े और कमजोर होने के कारण ज्यादा काम नहीं कर पाते हैं अतः वह केवल आरामदायक कार्य करने में ही सक्षम है। इस प्रकार मेरे पिता जी मूंगफली की रेहडी चलाते हैं और माताजी दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा करने का काम करती है। यदि मैं मेरी बात करुं तो मैं सुबह 8:00 बजे स्कूल जाता हूं, वहां से 3:00 बजे आकर मैं अपने सेंटर पर 4:00 बजे पढ़ने जाता हूं और 4:30 बजे मैं भी मूंगफली की रेहडी पर जाता हूं जहां मेरे पापा मूंगफली बेचते हैं तो मैं भी उनके साथ मूंगफली बेचने लगता हूं क्योंकि मेरे पिताजी मूंगफली की रेहडी में धक्का नहीं लगा पाते हैं और वह एक जगह बैठकर ही मूंगफली बेच पाते हैं जिससे हमें कम फायदा होता है और हमें ज्यादा आमद की वजह से हमें मूंगफली की रेहडी घुमानी होती है मैं अपने पापा के साथ मदद करके बहुत खुश होता हूं क्योंकि मेरे पापा मुझे एक बहुत बड़ा इंजीनियर बनना चाहते हैं इसलिए वह हमारे लिए इस परिस्थिति में भी काम करते हैं और हमारे पापा भी खुश होते हैं कि मैं अपने पढ़ाई के साथ अपने पापा का मदद भी करता हूं और मेरे छोटे भाई-बहन घर में मम्मी की मदद करते हैं जैसे खाना बनाने में, घर की सफाई करने में इत्यादि। अब तो आलम ये है की बादल के पड़ोस के बच्चे भी बादल के इस प्रकार के स्वभाव के कायल है कि यह कितने मेहनती बच्चे हैं और यह अपने पढ़ाई के साथ दूसरे काम भी कर रहे हैं, बादल के इस कदम ने बहुत बच्चों को जागरूकता किया और बहुत से बच्चे बालक की वजह से स्कूल पढ़ने लगे और साथ में अपना काम भी जारी रखें हुए है, अंत में बादल कहता है की ह्यबहादुर बच्चों के किस्से थोड़े अजीब होते हैं और अक्सर इन्हें दुख ही नसीब होते हैं' परन्तु मैं एक दिन अपनी मेहनत से सब कुछ ठीक कर दूंगा।

# झुग्गी का वाजिब किराया देने के बाद भी नहीं मिल पाती है मूलभूत सुविधायें

रिपोर्टर किशन

जब बालकनामा के पत्रकार दौरा कर रहे थे तो उस दौरान वे एक ऐसी बस्ती में पहुंचे जहां पर लगभग 25 झुग्गियां स्थित थी। पत्रकारों ने जब बस्ती की तरफ अच्छे से देखा तो पत्रकारों को लगा कि यहां के बच्चों से बात करनी चाहिए क्योंकि झुग्गी बस्ती में कुछ ही सुविधा थी जो बच्चों को उपलब्ध थी पर अधिकतर सुविधाओं से बच्चे अभी भी वंचित लग रहे थे। झुग्गी बस्ती में रहने वाला एक 15 वर्षीय बालक से हमने जब पूछा की बस्ती में क्या-क्या सुविधा उपलब्ध है व किन-किन परेशानियों से वह जूझ रहे हैं? इस विषय पर बालक ने बताते हुए कहा की इस स्थान पर हम पिछले लगभग 6 वर्ष से रह रहे हैं। झुग्गी बस्ती के पांच सौ मीटर दूरी पर कुछ बिल्डिंग बन रही हैं और इस बस्ती में रहने वाले अधिकतर लोग वहाँ बेलदारी और बिल्डिंग बनाने का काम करते हैं। हमारी झुग्गी बस्ती के कुछ दूरी पर गांव भी स्थित है उस गांव में किराए के कमरे भी मौजूद है और एक किराए के कमरे का किराया लगभग 3000 लगता है अब जिस झुग्गी में हम रह रहे हैं इस झुग्गी बस्ती में भी 3000 किराया लगता है पर इधर पानी की कोई समस्या नहीं है। पानी हमेशा उपलब्ध रहता है परन्तु झुग्गी टिन से बनी हुई है और टिन के ऊपर काफी पत्थर रखे हुए हैं ताकि टिन उड़े नहीं पर जब अधिक बारिश और आंधी आती है तो आंधी के कारण झुग्गी की टीन उड़ने लगती है और झुग्गी बस्ती में पानी भी भरने लगता है। हमारी झुग्गी बस्ती में बिजली की भी अधिकतर कमी रहती है बिजली रात में ही आती है और वह भी चोरी की बिजली आती है। दिन भर बिजली ना आने के कारण काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है और ना ही शौचालय की सुविधा है, शौचालय भी काफी गंदा रहता है और ना ही शौचालय में गेट लगा हुआ है साड़ी का पर्दा लगाकर गुजारा करते हैं बस्ती के मालिक को कई बार इस विषय पर बोल भी है पर वह अनसुनी कर देता है।

# बाल्यावस्था में सही अभिभावक मार्गदर्शन व सहयोग आवश्यक अन्यथा धकेल दिया जाता है काम पर

रिपोर्टर किशन

जब नोएडा के हबीबपुर गांव में बालकनामा पत्रकार पहुंचे तो स्कूल में जाने वाले बच्चों ने एक 12 वर्ष की बालिका के बारे में बताया की हम वर्तमान में छठी क्लास में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारी क्लास में एक ऐसी बालिका थी जिस का पढ़ने में मन नहीं लगता था पर वह हफ्ते भर में दो से तीन दिन रोजाना स्कूल आया करती थी और बाकी दिन वह घर पर रहकर समय बिताया करती थी।

बालिका के माता-पिता उसे बोलकर जाते थे कि तुम स्कूल चले जाना पर वह बालिका अपने अभिभावकों को बोलती थी कि हां ठीक है हम चले जाएंगे पर वह स्कूल नहीं आया करती थी क्योंकि उसका पढ़ाई में बिल्कुल भी मन नहीं लगता था। ऐसे ही एक दिन पेरेंट्स मीटिंग हुई जिस दौरान बालिका के पिताजी को पता चला कि यह हमें तो बोल देती है कि हम स्कूल गए थे, परंतु वह स्कूल नहीं जाती थी जिस कारण पिताजी ने बालिका का स्कूल से नाम कटवा दिया अब बालिका से पूछा गया कि तुम क्या करना चाहती हो? तो बालिका ने बोला मैं कुछ काम करना चाहती हूं क्योंकि मेरा पढ़ने में मन नहीं लगता, तो फिर बालिका को पिताजी ने कोठी में बर्तन धोना व साफसफाई करने के लिए कोठी में लगा दिया।

बालिका अब वर्तमान में रोजाना कोठी में बर्तन धोना, खाना बनाना आदि काम करने के लिए जाती है। वह सुबह से 6:00 बजे से काम काज पर जाती और कामकाज करने के बाद वह दोपहर के 1:00 बजे घर पर आती और खाना खाकर फिर 3:00 बजे दोबारा कोठी में बर्तन साफ करने के लिए चली जाती। पिताजी ने कोठी में कामकाज लगाने से पहले बालिका को फैक्ट्री में भी लगाया था। उस फैक्ट्री में कुछ दिन काम किया पर एक दिन फैक्ट्री में चेकिंग हुई जिस दौरान बालिका को वहां से भगा दिया और फिर दोबारा उसे कामकाज पर नहीं रखा गया जिस कारण पिताजी ने बालिका को बैठने नहीं दियाऔर कोठी में कामकाज लगा दिया।

अब वर्तमान में बालिका को 9000 मिलते हैं और वह उसी में से घर का खर्चा और अपना खर्च चलाती है पर जो बच्चे स्कूल जाते हैं उन बच्चों ने बताया की वह बालिका का पढ़ाई में मन नहीं लगता था पर यह नहीं कि वह बालिका का किसी में भी कार्य में मन नहीं लगता होगा पर शिक्षा भी प्राप्त करना अपने खुद के लिए एक अच्छी ताकत है परन्तु इस प्रकार पिताजी ने बालिका को कामकाज में लगा दिया जो की कदापि सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि पढाई बच्चे का हक है यदि वह चाहते तो बालिका को शिक्षा के प्रति समझाते और पुनः विद्यालय भेजते।



बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# मनचले लड़कों की वजह से बस्ती की बालिकाओं का घर से निकलना भी हुआ दूभर

बातूनी रिपोर्टर सुहाना,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने पलडा ढाणी कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया तो बातूनी रिपोर्टर सुहाना ने बताया कि हमारी झुग्गियों के आसपास के लड़के हम लड़कियों को देखकर सीटी बजाते हैं और धमकाते व डराते हैं जिससे लड़कियां सब डर जाती है और घर से बाहर नहीं निकलती है। यहां तक की उनके लिए पढ़ाई के लिए निकलना भी वे असुरक्षित समझती है मतलब कि अगर हम निकलेंगे तो ये अराजक तत्व हमें फिर से डराएंगे एवं धमकाएंगे जिससे हम लोग बहुत डरते हैं और इस प्रकार हमारे माता-पिता भी हमें घर से निकलने की इजाजत नहीं देते हैं हालाँकि घर में रहकर हम सब को बहुत बुरा लगता है यहां तक कि हम अपने सेंटर पर भी पढ़ने नहीं जा पाते हैं जिसे हमारी कांटेक्ट पॉइंट कि मैंम हमें बोलने आती है फिर भी हम डर के मारे नहीं जाते हैं। मुझे तो लगता है ऐसे लड़कों की वजह से ही हमारे माता-पिता लड़कियों का बाल विवाह कर देते हैं और साथ में कम उम्र में शादी करके सड़क एवं कामकाजी बच्चों का सपना तोड़ देते हैं जिससे उन बच्चों का छोटे-बड़े सपने टूट कर बिखर जाते हैं और उनके अंदर की कला बाहर नहीं आ पाती हैं साथ में वह लोग अपना

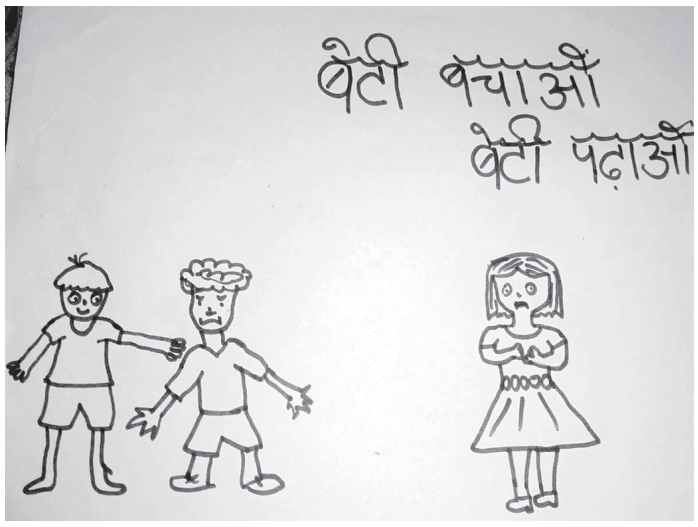


आत्म शक्ति भी खो देते हैं कि हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं और हमें घर में ही आजीवन रहना होगा। जब हमारे पत्रकारों ने उनसे पूछा कि अगर आपको इन सब समस्या का हाल मिल जाए और आपको कुछ बनने का मौका मिले तो आप क्या बनोगे? तो सुहाना ने बताया अगर हमारी यह समस्या दूर हो गई तो हम पढ़ लिखकर बड़े होकर एक अच्छा पुलिस ऑफिसर बनेंगे और ऐसे लड़के को जेल में बंद कर देंगे जिससे लड़कियां स्वतंत्र होकर पढ़-लिख सके और बाहर निकलने पर अपने आप को बिलकुल भी असुरक्षित ना समझे और खुल के अपना जीवन जी सके और अपने सपनों को साकार कर सके।

# दिखने में भले ही बड़े लगे पर आखिरकार है तो बच्चे ही

ब्यूरो रिपोर्ट

जब ग्रेटर नोएडा की झुग्गी बस्ती में बालकनामा के पत्रकार पहुंचे तो पाया की उस झुग्गी बस्ती के लगभग 100 मीटर की दूरी पर काफी सारी बिल्डिंग बनने का काम चल रहा था। पत्रकारों ने स्वयं अपनी आंखों से देखा कि काफी बच्चे इन बिल्डिंग निर्माण में तरह-तरह का कामकाज कर रहे थे। प्रथम दृष्टि में तो पत्रकार संकट में पड़ गए कि जो बच्चे बिल्डिंग में कामकाज कर रहे थे वह काफी बड़ी उम्र के लग रहे थे परन्तु जब पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाले 12-14 वर्ष के बच्चों से इस विषय पर जाना तो बच्चों ने बताया। जिस स्थान पर हम रहते हैं इस स्थान पर 50 से 55 झुग्गियां मौजूद है और अधिकतर झुग्गी में रहने वाले लोग इस 100 मीटर की दूरी पर बिल्डिंग में कामकाज करने के लिए जाते हैं।

यह झुग्गियां बिल्डिंग के लोगों ने ही हमें रहने के लिए दे रखी है। हम भी इसी झुग्गी बस्ती में रहते हैं और हमारे माता-पिता इस बिल्डिंग में कामकाज करने के लिए जाते हैं। हम रोजाना स्कूल जाते हैं, और नन्हे परिंदे वैन आती है तो हम उसके माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। पत्रकारों ने जब इस बार में और अच्छे से जानने का प्रयास किया तो बच्चों ने बताते हुए कहा की इस बस्ती में जितने भी लोग रहते हैं और बच्चे भी रहते हैं वह बच्चे देखने में तो बड़े लगते हैं क्योंकि वह काफी लंबे-लंबे हैं पर वह 15 से 17 वर्ष के हैं और यह बच्चे अपने माता-पिता के साथ इस बिल्डिंग में काम करने के लिए जाते हैं यह बच्चे तरह-तरह का इस बिल्डिंग में कामकाज करते हैं जैसे बिल्डिंग में सीमेंट के कट्टे पहुंचाना, लिफ्ट के द्वारा बजरी पहुंचाना, बिल्डिंग का मलबा फेंकना आदि। यह बच्चे सुबह से अपने माता-पिता के साथ चले जाते हैं, और यह स्कूल नहीं जाते बल्कि दिनभर अपने माता-पिता के साथ पूरा समय उस बिल्डिंग में कामकाज करने के लिए देते हैं। जितना पैसा माता-पिता को रोजाना मिलता है उतना ही पैसा इन बच्चों को भी मिलता है, जो माता-पिता की हाजिरी में लिखा रहता है। इतना ही नहीं इन बिल्डिंग में रात में भी काम चलता है। बच्चे और पिता उस बिल्डिंग में रात के 11 बजे तक एक-एक एक्स्ट्रा हाजिरी लगाते हैं। जिससे इनकी रोजाना की चार से पांच हाजिरी हो जाती है जब कोई भी चेकिंग करने के लिए आता तो इन्हें कोई भी बच्चा नहीं कहता क्यूंकि यह शारीरिक तौर पर दिखने में इतने बड़े लगते हैं कि आप भी इन्हें देखने के बाद ही समझेंगे इसीलिए ये बेफिक्र होके बिल्डिंग में तरह-तरह का कामकाज करने में लगे रहते हैं।

## घर में छोटे भाई बहन होने के कारण बच्चे नहीं जा पा रहे हैं स्कूल

बातूनी रिपोर्टर नूरजहाना,
बालकनामा रिपोर्ट सरिता

जैसा कि आपको पता ही होगा कि हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत मेहनती होते हैं और अगर उन्हें एक मौका दिया जाए तो वह कुछ भी कर सकते हैं। ऐसे ही हरियाणा की बालकनामा पत्रकार सरिता ने जब घाटा गांव कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया तो वहां एक 11 वर्ष की बच्ची नूरजहाना (परिवर्तित नाम) ने बताया की ह्लमेरी एक छोटी बहन और एक बड़ी बहन है और एक भाई है इस प्रकार मम्मी पापा सहित हमारे परिवार में 6 सदस्य हैं। मेरी बड़ी बहन स्कूल नहीं जा पाती है क्योंकि मेरा एक छोटा भाई और एक छोटी बहन है वह उन दोनों का ख्याल रखती है जिसकी वजह से मेरी बड़ी बहन स्कूल नहीं जा पाती है। मम्मी दूसरे के घरों में झाड़ू-पोछा, बर्तन और खाना बनाने का काम करती है। पापा कबाड़ी की दुकान चलाते हैं जिससे हमारा गुजारा चलता है अगर हमारी मम्मी काम करने नहीं जाए तो हमारा पारिवारिक खर्चों में बहुत दिक्कत आती है और हम ढंग से भोजन तक नहीं कर पाते हैं। मेरी बहन का भी मन करता है कि मैं भी अपनी छोटी बहन की तरह स्कूल जाती और उसकी तरह पढ़ाई करती और फिर उसे बहुत बुरा लगता है और बहन बहुत दुखी हो जाती है और कभी-कभी तो वह डिप्रेशन में भी चली जाती है कि मेरा भविष्य ऐसा ही होगा जैसे मेरी मम्मी का है और मैं अनपढ़ गंवार ही रहूंगी, कभी स्कूल पढ़ने नहीं जा पाऊंगी और नूरजहाना की बहन ने बताया कि मेरी बहन का हैंडराइटिंग इतना सुंदर है कि वह पहले स्कूल जाती थी तो वहां उसकी बहुत तारीफ होती थी और साथ में उसका ड्राइंग भी एकदम 3ऊ की तरह है कि वह किसी वस्तु या मनुष्य, पूरी पृथ्वी में सभी चीज का ड्राइंग बना लेती है उसे हर चीज में इंटरेस्ट था और खेलकूद में भी वह आगे थी, यहां तक की वहां के अध्यापक अभी भी हमारी बहन को याद करते है। जब हमारे पत्रकारों ने नूरजहाना की बहन से बात की अगर आपको एक मौका फिर से मिले कुछ बनने का तो आप क्या बनोगे? तो नूरजहाना की बहन ने कहा मैं एक बहुत बड़ा आर्टिस्ट बनना चाहती हूं और अपने सपने पूरा करना चाहती हूं जिससे मुझे अपनी मम्मी की तरह दूसरे के घरों में काम न करना पड़े।'

## सौतेली मां के कहर से बालिका हुई परेशान

बालकनामा रिपोर्टर

गुड़गांव की एक बस्ती में जब बालकनामा पत्रकार पहुंचे तो पत्रकारों की भेंट एक ऐसी बालिका से हुई जिसकी माता जी की मृत्यु हो चुकी थी और वह वर्तमान में अपनी सौतेली मां के पास रह रही थी। मुलाकात के दौरान बालिका ने बताया की अपनी सौतेली मां के पास रहने में उसे किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है?

बालिका कहती है की मेरा नाम सोनिया (परिवर्तित नाम) है, मैं वर्तमान में गुड़गांव में ही किराए की एक झुग्गी बस्ती में अपनी सौतेली माता और पिता के पास रहती हूँ। मैं जब 7 वर्ष की थी तब मेरी माता जी की मृत्यु हो गई थी और माता जी की मृत्यु के 2 साल बाद पिताजी ने दूसरी शादी कर ली। जो मेरी सौतेली माता आई तो मैं उन्हें मां कहकर नहीं पुकारती थी क्योंकि मैं अपनी मां को जानती हूं और मेरे पिताजी और सौतेली मां मुझे जबरदस्ती उन्हें मां कहने के लिए बोलते है पर मेरा मन नहीं करता है। मेरे पिताजी फैक्ट्री में कामकाज करने के लिए जाते हैं। मैं सुबह से लेकर शाम तक घर का घरेलू कामकाज में लगी रहती हूँ जैसे बर्तन धोना, खाना बनाना, कपड़े

धोना, आदि।

मेरा पूरा दिन इन्हीं कामों में निकल जाता है पर जो मेरी सौतेली मां है वह मेरे द्वारा किये गए कामों में काफी सारी गलतियां निकालती हैं और जब पापा कामकाज पर चले जाते हैं तो बहुत अत्याचार करती है हालाँकि पापा के सामने वो मुझे ना कुछ बोलती है और ना ही मारती है पर जब वो घर में नहीं होते तब मेरी सौतेली माँ मेरे हर काम में गलतियों पर गलतियां निकलती हैं, काफी गंदी-गंदी गालियों का भी प्रयोग करती है।

एक दिन तंग आकर मैंने एक बार पिताजी से शिकायत कर दी पर पिताजी ने मेरी बात को तो सुन लिया था पर जब पिताजी कामकाज पर चले गए तो इन्होंने मुझे खूब मारा इस कारण मैं बार-बार नहीं बोलती और अब तो बोलने से भी डरती हूं। सच कहते हैं लोग की अपनी मां अपनी होती है सौतेली मां तो बस नाम की मां होती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# छोटे बहन-भाइयों को संभालना ही बन रही हमारे पांव की बेड़ियां

## हो रहे है शिक्षा से दूर

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी, रिपोर्टर किशन

जब बालकनामा पत्रकार नोएडा की बस्ती में पहुंचे जहां पर अधिकतर बच्चे अपने छोटे बहन-भाइयों को संभालने के कार्य में व्यस्त थे तब पत्रकारों ने उन बच्चों से जानने का प्रयास किया कि वह बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाते और छोटे बहन भाइयों को संभालने का क्या कारण है? इस प्रश्न का प्रतिउत्तर देते हुए एक 13 वर्ष की बालिका ने बताया की हम यहां पर झुग्गी बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं पर हम वर्तमान में स्कूल नहीं जाते

और अपने छोटे-छोटे बहन भाइयों की देखभाल व संभालने का काम करते हैं। हर रोज सुबह से हमारे माता-पिता कामकाज पर चले जाते हैं माता की कोठी में कामकाज करती है और पिताजी सरकारी पार्क के खेत काटने का काम करते हैं पर माता-पिता कामकाज पर चले जाते हैं तो छोटे बहन-भाइयों को संभालने वाला कोई नहीं होता जिस कारण हमें अपने छोटे बहन भाइयों को संभालना ही पड़ता है क्योंकि ये काम हम पड़ोसी में किसी को देकर नहीं जा सकते हैं, क्योंकि हर कोई देखने के लिए मना कर देता है। छोटे बहन-भाइयों को संभालने के साथ-साथ हमें घर का घरेलू कामकाज भी करना पड़ता है। और पूरा दिन बहन भाइयों को संभालना और घर का घरेलू कामकाज में बीत जाता है जिस कारण हम बच्चे स्कूल नहीं जा पाते हैं इस बस्ती में अधिकतर बच्चे ऐसे हैं जो यही कार्य में व्यस्त हैं।

**CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS**

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
**1098**
Police Helpline Number
**100**

# पिता के शराब पीने से बच्चे होते हैं काफी शर्मिंदा, बिगड़ता है पढाई का माहौल

बातूनी रिपोर्टर बादशाह, रिपोर्टर किशन

बालकनामा पत्रकारों ने एक बस्ती में जब एक बच्चे से बात की तो बच्चे ने बताया कि, भैया मेरे स्कूल में एक मेरा दोस्त है जो वर्तमान में एक समस्या से जूझ रहा है। वह 13 वर्ष का है एवं किराए की झुग्गी बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहता है। वह पढ़ने में काफी होशियार है और वह स्कूल में भी रोजाना पढ़ने के लिए आता है और उसकी स्कूल में रोजाना तारीफ भी होती है पर वह घर की एक परेशानी से परेशान रहता है। जिस कारण वह और धीरे-धीरे पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाता। उसके घर में माताजी और पिताजी हैं, पिताजी मिस्त्री का कामकाज करते और माताजी कोठियां में काम करने के लिए जाती है पिताजी जो भी काम करते उनका काम करने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि वह घर में कोई पैसा नहीं देते, माताजी जो कोठियां में कामकाज करती है उन्हें ही अपने कमाए पैसों से घर का खर्च चलना पड़ता है। जब पिताजी रात में कामकाज से आते हैं तो पिताजी को पैसे मिल जाते और पिताजी तुरंत उन पैसों से दारू पीकर आ जाते हैं। जब माताजी घर चलाने के लिए पैसे मांगती तो पिताजी नहीं देते और गाली गलौज करते है जिस कारण माताजी नाराज हो जाती और पिताजी माता जी को काफी बुरी तरह से मारते भी हैं जो देखकर मुझे काफी बुरा लगता है और इतना ही नहीं जब कभी पिताजी कामकाज पर नहीं जाते तो माताजी घर में जो पैसे बचा कर रखती हैं घर के खर्च चलाने के लिए वह पैसे भी निकाल कर ले जाते हैं और शराब पीकर आ जाते हैं, ना तो पिताजी को घर के जिम्मेदारी की फिक्र रहती है और ना किराया देने की फिक्र रहती है पर इन सब के कारण मुझे कभी-कभी काफी बुरा लगता और ऐसा लगता कि मैं शिक्षा छोड़कर कमाने लग जाऊं।

# घर-घर आटा-चावल मांग कर सड़क एवं कामकाजी बच्चे पाल रहे हैं अपना पेट

बातूनी रिपोर्टर सुषमा , रिपोर्टर किशन

इस खबर में हम उन बच्चों की बात कर रहे हैं जो बच्चे घर-घर जाकर भीख मांगने का कार्य करते हैं। आपने यह रोजाना गली-मोहल्ले और घरों के आसपास देखा ही होगा परन्तु इस खबर में बच्चे कुछ नए तरीके से भीख मांगने का कार्य कर रहे हैं जैसे बच्चे घर-घर जाकर भीख मांगते हैं। गुड़गांव की एक बस्ती में जब बालकनामा पत्रकार पहुंचे तो पत्रकारों ने बालकनामा की बातूनी पत्रकार से बात किया तो बातूनी पत्रकार ने बताया कि हमारे इस स्थान पर अधिकतर बच्चे भीख मांगने के लिए रोजाना आते हैं। जो-जो बच्चे मांगने का कार्य करते हैं, पत्रकारों ने उनमें से कुछ बच्चों से बातचीत करके बालकनामा के पत्रकार को बताया की एक 11 वर्ष का बालक है जो भीख मांगने का कार्य करता

है। वह रोजाना गांव,गली-मोहल्ला जैसे स्थानों पर घर-घर जाकर भीख मांगता है। भीख मांगने में कई चीजे आती हैं पर बच्चे घर पर जब मांगने के लिए जाते हैं तो वह अपने साथ थैला या बोरी आदि लेकर जाते हैं और वह बच्चों को जो मिल जाए वह ले लेते हैं मसलन घर चलाने के लिए राशन जैसे चावल, दाल, आटा, सब्जी, मसाला, आदि और जिस दौरान जब हम घर पर जाते हैं तो हम बच्चों को कुछ ना कुछ तो मिल ही जाता है। हम यह भी मानते हैं कि यदि हम किसी के भी घर पर मांगने के लिए जाते हैं तो लोग घर पे मांगने आए हुए लोगों को कभी खाली हाथ नहीं लौटाते फिर चाहे वह दो ही रुपए या 5 रुपए दें या वह घर का राशन दे और इस राशन से घर का खर्चा बच जाता है इसके अलावा हमारे माता-पिता सड़कों पर रेड लाइटों पर भी मांगने के लिए जाते हैं जिन पैसों से और घर का खर्च चलाने में मदद मिलती है। हम सुबह से मांगने के लिए निकल जाते हैं और शाम तक घर पर वापस लौट कर आते हैं। अधिकतर जगह जब हम मांगने के लिए जाते हैं तो कुछ जगह ऐसा भी होता है कि लोग देने से मना कर देते और वह गुस्सा करके गाली-गलौज देकर भगा देते हैं। जिस कारण हम उनसे मांगते ही नहीं है। वहां से दूसरी जगह चले जाते हैं पर जिसके मन में होता है कि हमें देना चाहिए तो वह दे देता है हमें लगता है की हम शुरू से यही करते आए हैं इस कारण हम यह कार्य करके अपना जीवन बिताते हैं।

# आखिर क्यों नाबालिग बच्चे साप्ताहिक बाजार में पटरी लगाने को है मजबूर?

बातूनी रिपोर्टर - निहाल ,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार दिल्ली के अमर पार्क क्षेत्र में विजिट करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर निहाल ने बताया की उसके घर के पास साप्ताहिक बाजार लगता है जहा पर रेहड़ी-पटरी वाले छोटे-मोटे व्यापारी अपना जीविकोपार्जन के लिए सब्जी,मसाले,कपड़े इत्यादि रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाले घरेलू सामान बेचते है। उसने आगे बताया की इन साप्ताहिक बाजारों में स्कूल जाने वाले बच्चे भी पटरी लगाते है और जिस वजह से वे स्कूल नहीं जा पाते है। निहाल ने बताया की चौदह वर्षीय सोनू (परिवर्तित नाम) आठवी कक्षा में पढ़ता है और वो भी साप्ताहिक बाजार में पटरी लगाने का काम करता है साथ ही चेतना एनजीओ के कांटेक्ट क्लब पर पढ़ने भी जाता है। उससे जब पूछा गया की वो बाजार में जाकर पटरी क्यों लगाता है? तो उसने बताया की उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है जिस वजह से मजबूरी में वो बाजार में पटरी लगाता है। उसने

बताया की उसकी ही तरह और भी ऐसे कई सारे बच्चे है जो ये काम करते है उन सभी बच्चो में से काफी बच्चे ऐसे है जो अपने घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण माता-पिता की मदद के लिए बाजार लगाते है। लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी है जिनके माता-पिता उन्हे चंद पैसों के लिए जबरदस्ती बाजार लगाने भेजते है, जिसका दुष्प्रभाव उनकी शिक्षा पर पड़ रहा है। उनमें से कुछ बच्चे चेतना एनजीओ के कांटैक्ट क्लब में पढ़ने जातें है हालाँकि ज्यादातर बच्चे ये काम नहीं करना चाहते बल्कि वे पढ़ लिखकर अपना भविष्य उज्वल बनाना चाहते है, लेकिन उन्हें ये काम मजबूरी में घर संभालने के लिए या माता-पिता के दबाव में आकर करना पड़ता है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471